जिनवाणी स्तुति

(भुजंगप्रयात)

जिनादेशजाता जिनेंद्रा विख्याता, विशुद्धप्रबुद्धा नमों लोकमाता;
दुराचार दुर्नैहरा शंकरानी, नमो देवि *वागेश्वरी जैनवानी । १

सुधाधर्मसंसाधनी धर्मशाला, सुधाताप निर्नाशनी मेघमाला;
महामोहविध्वंसनी मोक्षदानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवानी । २

अखैवृक्षशाखा व्यतीताभिलाषा, कथा संस्कृता प्राकृता देशभाषा;
चिदानन्द-भूपालकी राजधानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवानी । ३

समाधानरुपा अनूपा अछुद्रा , अनेकान्तधा स्यादवादांकमुद्रा;
त्रिधा सप्तधा द्वादशांगी बखानी,नमो देवि वागेश्वरी जैनवानी । ४

अकोपा अमाना अदंभा अलोभा, श्रुतज्ञानरुपी मतिज्ञान शोभा;
महापावनी भावना भव्यमानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवानी । ५

अतीता अजीता सदा निर्विकारा, विषैवाटिकाखंडिनी खड्गधारा;
पुरापापविक्षेपकर्तृकृपाणी , नमो देवि वागेश्वरी जैनवानी । ६

अगाधा अबाधा निरंध्रा निराशा, अनंता अनादीश्वरी कर्मनाशा;
निशंका निरंका चिदंका भवानी, नमो देवि वागेश्वरी जैनवानी । ७

अशोकामुदेका विवेका विधानी, जगज्जंतुमित्रा विचित्रावसानी;
समस्तावलोका निरस्तानिदानी , नमो देवि वागेश्वरी जैनवानी । ८